मंगल भगवान् वीरो मंगलं
मंगलं स्थूलिभद्राद्या जैनधर्मो

थोकडे नं.

नंदीसूत्र—पांच ज्ञानाधिकार।

ज्ञान—वस्तुको सम्यक प्रकारे जानना—तत्त्व विचार सो ज्ञान पाच प्रकार है। यथा—मतिज्ञान श्रुतज्ञान अवधिज्ञान मन पर्यय ज्ञान केवल ज्ञान इन्हीका सक्षेपसे २ भेद है (१) प्रत्यक्ष ज्ञान (२) परोक्ष ज्ञान

प्रत्यक्ष ज्ञानका २ भेद है (१) इद्रिय प्रत्यक्ष ज्ञान (२) नो इद्रिय प्रत्यक्ष ज्ञान। इद्रिय प्रत्यक्ष ज्ञान—इद्रिय द्वारे वस्तुका ज्ञान होना जीस्का ५ भेद है श्रोतेंद्रिय प्रत्यक्षज्ञान (शब्द सुननासे), चक्षुद्रिय०(रूप देखनासे), घ्राणेंद्रिय० (सुगध, दुर्गंध पुद्गलोंकी वाससे) रसेंद्रिय (मधुरादि रस स्वादन करनासे) स्पर्सेंद्रिय (शीतोष्णादि स्पर्श होनासे) इति इद्रिय प्रत्यक्षज्ञान-नो इद्रिय प्रत्यक्ष ज्ञान—अतिशय ज्ञान जो कि भूत भविष्य वर्तमानकी वार्ता कहे शक्ते है जीस्का ३ भेद है—अवधिज्ञान, मन पर्यय० केवल०

अवधिज्ञानका २ भेद है (१) भव प्रत्य—नारकी देवताओंको होते है (२) क्षोपशम प्रत्य—मनुष्य और तिर्यंच पचेंद्रियकों ज्ञानावर्णीय कर्मका क्षोपशम होनासे अवधिज्ञान होता है अथवा गुण प्रतिपन्न अणगार—साधुको होता है जीस्का ६ भेद है

(१) अणुगामीक—जहां जावे व्हां साथ चले

(२) अणाणुगामीक—जहां उत्पन्न होवे व्हां ही रहे

(३) वृद्धमान—अधिकअधिक वढतां रहे.

(४) हीयमान—न्यून होता जावे.

(५) पडवाई—ज्ञान होके चला जावे.

(६) अपडवाई—ज्ञान कवी जावे नहि अर्थात् केवलज्ञानको प्राप्त करे,

विस्तारार्थ—अणुगामिक अवधिज्ञान २ प्रकारका है (१) अंतगयं (२) मज्जगयं.

अंतगयं—आत्माका एक तर्फका प्रदेशोंसे जाने देखे* जीस्का ३ भेद हैं (१) पुराओ (२) मागाओ (३) पासाओ.

(१) पुराओ—जेसे कोइ पुरुष लेन्टर्न (दीवो) वा मणी आदि हाथमें लेके अपने अगाडीका भागमें रखके चले तो उस्का प्रकाश अगाडीके भागमें पडे इसी माफिक मुनिके अगाडीके प्रदेशोंसे ज्ञान उत्पन्न होवा हे तो अगाडीमें ही संख्याता असंख्याता योजन तककी वार्ताकों जाने देखे.

(२) मागाओ—जेसे लेन्टर्न वा मणी आदि पीच्छेका भागमें रखे तो पीछे प्रकाश पडे इसी माफिक मुनिको पाछला प्रदेशोंसे ज्ञान हुवा है तो पीच्छे संख्याता असंख्याता योजनकी वार्ताकों जाने देखे।

---

* अवधिज्ञानके साहिक भूत अवधिदर्शन हे—अवधिज्ञानसे भणे और अवधिदर्शनसे देखे यहां संबंधीक वचन समझना.

(३) पासाओ–जेसे लेन्टर्न वा मणी आदि एक पासे वा दोनु पासे रखे तो प्रकाश पसवाडेमें पडे इसी माफिक मुनिके पसवाडेका प्रदेशोंसे ज्ञान हुवा है तो दोनु पासे सख्याता असख्याता योजनकी वार्ताको जाने, देखे।

मज्झगय–आत्माका मध्य प्रदेशोंसे जो अवधिज्ञान उत्पन्न होना जेसे कोई पुरुषने लेन्टर्न वा मणि आदि मस्तक पर रखे तो प्रकाश चोतरफ पडे इसी माफिक मुनिका आत्माका मध्य प्रदेशोंमे उत्पन्न हुवा ज्ञानसे चोतरफ सख्याता असख्याता योजनकी वार्ताकु जाने, देखे तात्पर्य–लेन्टर्न वा मणी आदि ज्या पर ले जावे वहा पर उन्हीका प्रकाश साथमें चले इसी माफिक अनानुगामि अवधिगामि अवधिज्ञान उत्पन्न हुवा मुनि ज्या जावे वहा ज्ञान भी साथमें रहे। इति।

(२) **अणानुगामि**–जेसे कोई पुरुष एक स्थान पर अग्निकी सगडी प्रज्वाले उसका प्रकाश उतना ही स्थानमें रहे के जहा अग्नि हो इसी माफिक कोई मुनिको अणानुगामि अवधिज्ञान जिस स्थान पर उत्पन्न हुवा है उसी स्थान पर स्थित रहा हुवा सख्याता असख्याता योजन तक सबधिक (आंतरा रहित) असबधिक (आंतरा सहित) पदार्थको जाने, देखे, परन्तु अन्य स्थान जावे तो नहि जाने, नहि देखे।

(३) **वर्धमान**–प्रसस्थ अध्यवसाय सुद्ध चारित्र अच्छी लेश्यावान मुनिको अवधिज्ञान उत्पन्न होवे बादमें चोतर्फ हमेश ज्ञानकी वृद्धि होती रहे, जिस्के अवधिज्ञान जघन्य तो तिमग्

समये अहारिक लीलण फूलण सूक्ष्म जीवोंकी अवगहना (देहमान) हो उतना क्षेत्र जाने, देखे उत्कृष्ट संपूर्ण लोक व लोक जीतना असंख्याता खंडा अलोकमें जाने और देखे, अब काल और क्षेत्रकी तुलना कर अवधिज्ञानकी विषय कहेते हैं।

कालका मान	क्षेत्रका मान
१ आवलिकाके असंख्यातमें भाग	आंगुलका असंख्यातमें भाग
२ ,, संख्यातमें भाग	,, संख्यातमें भाग
३ ,, कुछ न्यून	एक आंगुल
४ ,, पूर्ण	प्रत्येक आंगुल
५ मुहुर्त	एक हाथ
६ एक दिन	एक गाउ
७ प्रत्येक दिन	एक जोजन
८ एक पक्ष	पच्चीस जोजन
९ एक पक्ष न्यून	भरत क्षेत्र
१० एक मास अधिक	जंबुद्वीप
११ एक वर्ष	पूर्ण मनुष्य लोक
१२ प्रत्येक वर्ष	रुचक द्वीप
१३ संख्यातो काल	संख्याताद्वीप समुद्र
१४ असंख्यातो काल	संख्याता वा असंख्याता द्वीपसमुद्र

तात्पर्य ये है के एक कालकी वृद्धि होनासे क्षेत्र द्रव्य और भावकी वृद्धि अवश्य होती है और क्षेत्रकी वृद्धि होनासे

कालकी वृद्धि हो या न भी हो। और द्रव्य भावकी वृद्धि अवश्य होती है। द्रव्यकी वृद्धि होनेसे काल वा क्षेत्रकी वृद्धि होवे या न होवे और भावकी वृद्धि अवश्य होती है। और भावकी वृद्धि होनेसे काल क्षेत्र और द्रव्यकी वृद्धि होवे या न भी होवे।

द्रव्य, क्षेत्र, काल और भावमें सूक्ष्म कोण है? काल सूक्ष्म है और कालसे क्षेत्र बहुत सूक्ष्म है कारण एक सुइ अग्रे क्षेत्रका असंख्याता आकाश प्रदेश है उस्कु एक एक समय एक एक आकाश प्रदेश निकाले तो असंख्याती उत्सर्पिणी अवसर्पिणी पूरी हो जावे और क्षेत्रसे सूक्ष्म द्रव्य है कारण एक आकाश प्रदेशपर अनंता द्रव्य है और द्रव्यसे सूक्ष्म भाव है कारण एक एक द्रव्यमें वर्णादिक अनंत पर्याय है। (१) सबसे बादर काल (२) ते थकी क्षेत्र असंख्यात गुण सूक्ष्म है (३) तेथकी द्रव्य अनंत गुण सूक्ष्म है (४) ते थकी भाव अनंतगुण सूक्ष्म है। वर्धमान अवधिज्ञान वाले भूत भविष्यकालकी बात कह सकते है इति।

हयमान–अवधिज्ञान होनेके बाद अप्रशस्थ अध्यवसाय अशुद्ध चारित्र और अविशुद्ध लेश्या होजासे जो ज्ञान उत्पन्न हुआ था सो प्रतिदिन न्यून होता जावे। इति।

पडवाइ प्रतिपाति ज्ञान उत्पन्न होनेके बाद कोई कारणोंसे फिर चले जावे, जितना विस्तारवाला ज्ञान होता है सो बतलाते है। आंगुलके असंख्यातमें भाग क्षेत्र देखे, आंगुलके संख्यातमें भाग क्षेत्र देखे, बाल (केशाग्र) क्षेत्र देखे, प्रत्येक बाल, लीख, प्रत्येक लीख, जू प्रत्येक जू, जव प्रत्येक जव, आंगुल, प्रत्येक आंगुल, पाउ (पग) प्रत्येक पांउ, वेंत, प्रत्येक वेंत, हाथ, प्रत्येकहाथ, कुक्षि

(दोहाथ), प्रत्येक कुत्सि, धनुष्य, प्रत्येक धनुष्य, गाउ, प्रत्येक गाउ जोजन, प्रत्येक जोजन, सो जोजन, प्रत्येक सो जोजन, हजार जोजन, प्रत्येक हजार जोजन, लाख जोजन, प्रत्येक लाखजोजन, क्रोड जोजन, प्रत्येक क्रोडजोजन क्रोडाक्रोडजोजन, प्रत्येक संख्याता जोजन, असंख्याता जोजन, यावत् संपूर्ण लोकको देखके पिछा पडे (चलाजावे) उसकु पडवाइ अवधिज्ञान कहते है। पीछा पडजानेका कारण ठाणायंग सूत्रका सातमा ठाणामें लीखा है। इति।

अपडवाइ—अप्रतिपाति—ज्ञान उत्पन्न होनेके बाद पीछा न पडे किंतु अंतः मुहुर्तमे केवलज्ञानकी प्राप्ती करते है। पूर्ववत् संपूर्ण लोक देखके अलोकका एक प्रदेश भी देखे वह अपडवाई अवधिज्ञान अंतः मुहुर्तके अंदर केवलज्ञान अवश्य प्रात करते हे इति।

इन्ह छ भेदके सिवाय भी पन्नवणा सूत्र पद ३३ में अवधिज्ञानका अधिकार है वह अलग लिखा जावेगा।

अव अवधिज्ञानका संक्षेपसे ४ भेद कहेते हे.

(१) द्रव्य, (२) क्षेत्र (३) काल (४) भाव.

(१) द्रव्यसे अवधिज्ञानवाला जघन्य अनन्ता रूपी द्रव्यकों जाणे देखे उत्कृष्टा सर्व रुपी द्रव्य जाणे, देखे.

(२) क्षेत्रसे—जघन्य तो आंगुलके असंख्यातमें भाग क्षेत्र और उत्कृष्ट संपूर्ण लोक और लोक जेसा असंख्यात खंड अलोकमें जाणे देखे.

(३) कालसे—जघन्य तो आवलिकाके असंख्यात भाग काल और उत्कृष्ट असंख्याति उत्सर्पिणी अवसर्पिणीकी बात जाणे देखे.

(४) भावसे-जघन्य अनताभव उत्कृष्ट अनन्ता भाव सर्व भावके अनन्तमे भाग भाव जाणे देखे (अनताका अनता भेद है) इति

(२) मनःपर्यव ज्ञान-अढाई द्वीपके सनी पचेन्द्रियका मनोगत भावकों जाने देखे इस ज्ञानका अधिकारी-मनुष्य, गर्भज, कर्मभूमि सख्यातवर्षकाआयुष्य पर्याप्ता सम्यक्दृष्टि, सयति अप्रमत्त, ऋद्धिमता ऐसे मुनियोंको मन पर्यव ज्ञान उत्पन्न होता है जीसका २ भेद है-ऋजुमति और विपुलमति उसका सक्षेप कर ४भेद है-द्रव्य, क्षेत्र, काल, भाव,

(१) द्रव्यसे ऋजुमति-अनताअनत प्रदेशी स्कध जाणे देखे और विपुल मति इनासे विशुद्ध विस्तार कर अधिक जाने देखे

(२) क्षेत्रसे ऋजुमति-उर्द्धलोक जोतिषीयाकों उपरको तलो जाणे देखे तीर्छा लोकमें दो समुद्र अढाई द्वीपमें पनर कर्मभुमि, तीस अकर्म भुमि, ५६ अतर द्वीपाका सनी पचेन्द्रियका मनोगत भाव जाणे देखे, विपुलमति इसमे अढाई आगुल अधिक क्षेत्र विशुद्ध व विस्तारसे जाणे देखे

(३) कालसे-ऋजुमति जघन्य तो पल्योपमके असख्यातमे भागका काल उत्कृष्ट पल्योपमके असख्यात भागका काल भूत भविष्यकी बार्ता जाणे देखे और विपुलमति इनमे अधिक विशुद्ध विस्तारसे जाणे देखे

(४) भावसे ऋजुमति जघन्य अनताभाव उत्कृष्ट अनता-भाव सर्वभावके अनन्तमें भागका भाव जाणे देखे विपुलमति पूर्ववत इति

(३) **केवलज्ञान**–सर्व लोकालोकको हस्तामलकी माफिक जाने देखे जीस्का २ भेद हे।

(१) भवत्य केवलज्ञान (२) सिद्धत्थ केवलज्ञान

भवत्थ केवलज्ञानका २ भेद (१) संयोगी भवत्थ केवलज्ञान (२) अयोगी०। संयोगी भवत्थ केवलज्ञानका २ भेद है (१) प्रथम समय (केवल ज्ञानोत्पन्नका प्रथम समये) (२) अप्रथम समय (प्रथम समय वर्जके शेष) अथवा चर्म समय अचर्म समय एवं अयोगीका प्रथम समय, अप्रथम समय, चर्म समय, अचर्म समय समझना।

(२) सिद्धत्थ केवल ज्ञानका २ भेद (१) अणन्तर सिद्ध० (२) परम्पर सिद्ध० अणन्तर सिद्धाका १५ भेद है.

(१) तित्थे सिद्धा–पुण्डरीकादिगणधर
(२) अतित्थे सिद्धा–मरु देव्यादि
(३) तित्थयार सिद्धा–ऋषभादि
(४) अतित्थयार सिद्धा मुनिवरादि
(५) सयं बुद्ध सिद्धा–जाति स्मर्णादि ज्ञानसे बोध पामी सिद्ध होवे।
(६) बुद्धबोहि सिद्धा–तीर्थंकरादिका उपदेश पामी सिद्ध होवे।
(७) पतेय बुद्धि सिद्धा–करकण्ड वादि।
(८) इत्थिलिंग सिद्धा–भाववेदक्षय परंतु द्रव्यलिंगसे मल्लि जिनवत्।

(९) पुरिसलिंग सिद्धा " " " "
गौतमादि मुनि ।

(१०) नपुसक लिंग सिद्धा–जन्म नपुसक नहीं किन्तु
कृत नपुसक समझना गगीयाजी मुनिवत् ।

(११) सलिंग सिद्धा अग्निमूल आदि मुनि गण ।

(१२) अणलिंगसिद्धा–असोचाकेवलीदिमात्र चारित्र आनामे।

(१३) गिहिलिंगसिद्धा–मरु देव्यादि

(१४) एग सिद्धा–एक समयमें एक सिद्धा

(१५) अनेक सिद्धा–एक समयमें अनेक सिद्धा ।

परपर सिद्धाका अनेक भेद है अप्रथमसमय । सिद्धा प्रथम समय वर्जके कारण प्रथम समयतो अणन्तर सिद्धामे घजा गया था वास्ते शेष समयको अप्रथम समय कहेते है एव २–३–४–५–६–७–८–९–१० सख्याता और असख्याता अनन्ता समय सिद्ध हुवा सो सर्व परम्पर सिद्धा मानना केवल-ज्ञानका सक्षेपसे ४ भेद है द्रव्य, क्षेत्र, काल, भाव ।

(१) द्रव्यमे केवलज्ञानी सर्व द्रव्य–पदार्थको जाणे देखे ।

(२) क्षेत्रसे सर्वक्षेत्र लोकालोकका भाव जाणे देखे ।

(३) कालसे सर्वकाल भूतभविष्यवर्तमान सर्व कालको
जाणे देखे ।

(४) भावमे सर्व भावको जाणे देखे । इति केवलज्ञान ।

इति नो इन्द्रिय प्रत्यक्षज्ञान ।

(२) **परोक्षज्ञानका** २ भेद है (१) मतिज्ञान (मतिसे विचार करणासे) (२) श्रुतज्ञान (श्रवण करणासे प्राप्त होता है) ज्हां मति ज्ञान है व्हां श्रुतज्ञान है और ज्हां श्रुत ज्ञान न है व्हा मति ज्ञान अवश्य है। श्रुतज्ञान पठन पाठन श्रवणादि है वह भी मतिपूर्वक हो तो प्रमाणिक गणा जाता है वास्ते मतिज्ञान पेस्तरका है (क) सम्यक दृष्टिके सम्यकत्व विचार होनासेमतिज्ञान होता है और मिथ्यादृष्टिके विषम तत्त्व विचार होनासे मति अज्ञान होता है। (ख) सम्यक दृष्टिके सम्यक ज्ञान और सम्यक ज्ञानमें प्रवृत्ति होनासे श्रुत ज्ञानका है और मिथ्या दृष्टिके मिथ्याज्ञान और मिथ्याप्रवृत्तिहोनासे श्रुत अज्ञानका है।

मतिज्ञानका २ भेद है (१) श्रूत निश्रित (२) अश्रूत निश्रित जीरमे अश्रूत निश्रितका चार भेद है। (१) उत्पातिका बुद्धि। विना सूने विनादेखे प्रश्नका उत्तर देवे (२) कमिआ–कार्य करणेसे जेसे कर्या हो वेसीबुद्धिहोवे (३) विनया–विनय करणेसे बुद्धि होवे (४) परिणामिआ क्रमःसर अवस्था वधती जावे वेसे बुद्धि वधे ये सब मति ज्ञानका भेद है। इस चार बुद्धि पर अनेक कथाओं हैं ।

श्रुत निश्रितका चार भेद–(१) उग्गहा (वस्तु ग्रहण) (२) इहा (विचार) (३) आवाए(निश्चय) (४) धारणा(स्मरणमें रखना).

उग्गहाका २ भेद-(१) अर्थ ग्रहण (मतलब) (२) व्यजन ग्रहण (पुद्गल) व्यजन ग्रहणका ४ भेद-(१) श्रोतेंद्रियव्यजन ग्रहण (२) घ्राणेंद्रिय (३) रसेंद्रिय (४) स्पर्शेंद्रिय इन चारो इद्रियोंके विषयका पुद्गल ग्रहण करणासे ही ज्ञान होता है और चक्षु इद्रियके पुद्गलोंका स्पर्श होनासे ज्ञानका अभाव है।

अर्थ-ग्रहणका ६ भेद-(१) श्रोतेंद्रिय अर्थ ग्रहण (श्रवण कर उस्का मतलबकु जाणे एव (२) चक्षु इन्द्रिय० (रुप) (३) घ्राणेद्रिय० (गध) (४) रसेंद्रिय० (रस (५) स्पर्शेन्द्रिय० (स्पर्श) (६) नो इन्द्रिय (मन०) इन छोंका अर्थ एक ही है परन्तु उच्चारण घोष अलग अलग है। जीस्का भेद पाच है (१) ग्रहण करना (२) धरी रखना (३) सभारणा (४) विचारणा (५) निश्चय करना।

इहाका छ भेद (१) श्रोतेंद्रिय इहा (२) चक्षु (३) घ्राण (४) रस (५) स्पर्श (६) मन इस्का अर्थ एक ही है। परन्तु उच्चारण घोष अलग अलग है जीस्का भेद ५ है (१) विचारमें प्रवेश करना (२) विचार करे (३) गवेषण करे (४) चिंतवे (५) विमासण करे आवायका भेद ६-(१) श्रोतेंद्रिय०(२)चक्षु०(३)घ्राण० (४) रस (५) स्पर्श (६) मन इस्का अर्थ एक है परतु उच्चार घोष अलग अलग है जीस्का भेद ५-(१) पूर्व इहामें जो अर्थ ग्रहण कीया था जीसका विचार करे (२) चिंतवन करके निश्चय करे (३) विशेष प्रकारे निश्चय करे (४) बुद्धि पूर्वक निश्चय करे ५) विज्ञान पूर्वक निश्चय करे।

धारणाका भेद ६ (१) श्रोतेंद्रिय (२) चक्षु (३) घ्राण (४) रस (५) स्पर्श (६) मन इस्का अर्थ एक ही है उच्चार घोष

अलग अलग है जीस्का भेद ५) है (१) धारी रखना (२) विशेष धारी रखना (३) हृदयके अदर स्थापन करना (४) विशेष स्थापन करना (५) कोठामें धान्यकी माफिक धार रखे कभी भूले नहि। कालमानः—उग्गहा एकसमय, इहांअवाए अंतः मुहुर्त, धारणा संख्याता असंख्याता काल धारी रखे एवं श्रूतनिश्रित मतिज्ञानका २८ भेद इसपर २ दृष्टांत शास्त्रकार कहते है ।

प्रथम दृष्टांत कोइ पुरुष अपणी सुखशय्यामें सूता था और दूसरो कोई एकपुरुष सूतेहुवे पुरुषको जाग्रत करनेके लिये पुकार करी पुकार करनेवालेके शब्दका पुद्गल सूते हुवेके कानमें पडे शिष्य प्रश्न करता है के जो पुद्गल सुते हुवेके कानमे पडे वो क्या एक समयकी स्थितिका है व दोतीन जाव संख्याता असंख्याता समयकी स्थितिका है उत्तर एक समयजाव संख्याता समयकी तिस्थितिका नहि है किंतु असंख्याता समयकी स्थितिका है। तात्पर्य पुकार—बोलनेके अनन्तर असंख्यात समयसे सूते हुवे पुरुषके कानमें पुद्गल पडनेसे विचार हुवाकी मुझे कोई जाग्रत करते है उस्कु **उग्गहा** कहेते है बादमे विचार कीया की पुकारकरनेवालेकोणहै उस्कु **इहा** कहते है बाद मे निश्चय कीया की अमुक है उस्कु **आवाय** कहेते है उस वातकु भविष्यमे स्मरणमें रखना उसे **धारणा** कहेते है एव रुप गंध रस स्पर्श और स्वप्नादि सर्व पदार्थमे उपर माफिक समझना ।

दूसरा दृष्टांत जेसे कोई पुरुष कुंभाकारकेवहासे कोरी घटीकी एक सरावलो (पासलीयो) लायके उस्मे एक जलबिंदु नाखे वो तत्काल विध्वंस हो जावे एव २–३ जाव बहातेसे जल बिंदु नाखतानाखतासरावलोभगने बादमेजलबिंदु बहार निकले इसि माफिक भाषाका पुद्गल श्रोतेंद्रियकी विषय पूर्ण कानमें पुद्गल पडे तब ज्ञात हो के मेरोको कोई पुरुष पोकारता है विशेष भाषाका पुद्गलोंका ज्ञान थोकडा भाग नीजामे देखो। इसी माफिक शब्द यावत् सुपा समझना।

मतिज्ञानका बहुवादीक १२ भेद कर्म ग्रंथादिकमें कहा है व्हासे देख लेना यहा सक्षेपसे मतिज्ञानका ४ भेद कहा है (१) द्रव्य (२) क्षेत्र (३) काल (४) भाव।

(१) द्रव्यसे–सक्षेपमे सर्व द्रव्यको जाणे परतु देखे नहि।
(२) क्षेत्रको सक्षेपमे सर्व क्षेत्रको जाणे परतु देखे नहि।
(३) कालसे–सक्षेपमे सर्वकालको जाणे परतु देखे नहि।
(४) भावसे–सक्षेपसे सर्व भावको जाणे परतु देखे नहि।

इति मति ज्ञान.

श्रुतज्ञान सामान्य प्रकारे पठन पाठन शास्त्र श्रवणसे होता है, व अक्षराधिक है, वोभी श्रुतज्ञान है, जिसका १४ भेद है।

(१) अक्खर सुय–अक्षर श्रुतज्ञान जिसका ३ भेद है, (१) अक्षर (सज्ञा) का स्थानोपयोग युक्त उच्चारण (२) ह्रस्व दीर्घ उदत्त अनुदतादि शुद्ध (३) लब्धि अक्षर इन्द्रियजनित जेसे शब्द

सुनके जाणेकी यह शंखका शब्द है, एवं रूप, गंध, रस, स्पर्श में स्व विषयकुं जाने नोइंद्रिय (मन) से जाने वो नो इंद्रिय लब्धि अक्षर हे इति.

(२) अणाक्खर सुयं—अनाक्षर श्रुतज्ञान, मुख मचकोडवुं, आंखका इसारा शिर धुणवो, हांसी खांसी, छीक, उबासी, हुंकार उश्वास, निश्वासादिक सर्व अक्षर विना ज्ञान हो उसे अनाक्षर श्रुतज्ञान कहेते हे. वाजंत्रादि सर्व.

(३) सन्नि सुयं—संज्ञि मनका उपयोग संयुक्त ऐसा सन्नि पंचेंद्रियकों श्रुत ज्ञान हो जीस्का तीन भेद हे (१) कालसे दीर्घ कालका श्रुतज्ञानको विचारे और निश्चय करे अन्य धर्म स्वधर्मको विचारे विशेष निश्चय करे (२) हेतुसे हित उपदेशादिकुं चिंतवन करे दृष्टिवाद आदि ज्ञान पढना ए सर्व सन्नि श्रुतज्ञान है

(४) असन्नि सुयं—असंज्ञि श्रुतज्ञान—मनका उपयोग रहित एकेंद्रियसे असन्नि पंचेंद्रितक अवक्तपणे हो उस्का ३ भेद सन्निसे विपरित वो ३ भेद है.

(५) समसुयं—सम्यक श्रुतज्ञान श्री अरिहंत भगवत, जिन, केवली, सर्वज्ञ, परणित स्याद्वाद वाणी परस्पर अविरोध तत्वविचार षट्द्रव्य नय निक्षेप, द्रव्य गुण, पर्याय संयुक्त भव जीवोंका कल्याणके लीये श्री तिर्थकरोके मुखारविंदसे अर्थ रुप और गणधर रचित द्वादशांग सूत्रको शमसूत्र कहेते हे त्था चौद पूर्वधारीयोंके रचे हुवे वह अभिन्न दश पूर्वधारीयोंके रचे हुवे सूत्रकु भी समा सूत्र कहा जाते है और दशपूर्वसे कुछ न्यून ज्ञानवाला हो उस्के रचे हुवे सूत्रमें भजना (सत्य हो या असत्यका भी संभव है)

(क) सम्यसूत्र सम्यक्दृष्टिके सम्यपणे प्रणमे और मिथ्या दृष्टिकी श्रद्धा विपरित होनासे मिथ्यात्वपणे प्रणमे जेसे जमाली आदि (६) मिच्छ सुय–मिथ्या श्रुतनान असर्वज्ञा सरागी कथित परस्पर निरुद्ध बालक्रीडावत जीवोंके अहितकारक जीसमें पशुवधादि उपदेश व स्वार्थवृत्ति और स्वविषय पोषण संयुक्त जेसे भार्त, रामायण वा वेद, पुराण ससारिक कल्पाओ आदि सर्व मिथ्या सूत्र है (ख) मिथ्या सूत्र मिथ्या दृष्टिके मिथ्यात्वपणे प्रणमे और सम्य-दृष्टिकी श्रद्धा शुद्ध होनासे मिथ्या सूत्र भी समपणे प्रणमे गौतम स्वामी वत्

(७–१०) **साइआ, सापज्जवसिया अणाइया आपज्जवसिया**–साथ, सान्त, अनाद्य, अनत यहा चार द्वार साथमें कहेते है, श्रुतनान द्वादशागी आश्रयी विरहकाल अपेक्षा सादि सान्त है अविरह काल अपेक्षा अनादि अन्त है जिस्का भेद ४ द्रव्य, क्षेत्र, काल, भाव

(१) द्रव्य एक पुरुषाश्रयी श्रुतज्ञान सादिसान्त है और घणा जीव आश्रयी अनादि अनत है

(२) क्षेत्र–पाच भरत पाच ऐरावत आश्रयी सादिसांत है और पाच महाविदेह आश्रयी अनादि अनत है।

(३) काल–उत्सर्पिणी, अवसर्पिणी आश्रयी सादि शान्त है और नो उत्सर्पिणी नो अवसर्पिणी काल आश्रयी अनादि अनन है।

(४) भाव–जो जिन परुपित भाव सामान्य विशेष पणे उदेशीया है और परुपेया है वो भाव आश्रयी आदि सान्त

है और क्षयोपशम भाव आश्रयी अनादि अनंत है। अथवा भव सिद्धि आश्रयी सादि सन्त है और अभव सिद्धि आश्रयी अनादि अनंत है। यहां ज्ञान पढ़ना वो अपेक्षा समझना।

श्रुत ज्ञानका अविभाग, परिच्छेद (पर्याय) अनंता है जेसेकी सर्व आकाश प्रदेश वा धर्मास्ति कायादिककी अगुरु लघु पर्यायका समुह एकठा करे तब श्रुत ज्ञानका पर्याय एक अक्षर होता है।

सूक्ष्म निगोदका जीवोंसे लगाके स्थूल जीवोंके सदेव हंमेशा अक्षरके अनंतमें भागका श्रुतज्ञान कर आत्म प्रदेश निर्मल लेते है इसीसे ही चेतनपणा कहा जाता है अगर वह भी आच्छादन हो जावे तो चेतनपणा फीटके जडपणा हो जावे वास्ते एसा कभी नही होता है निश्चयकर अक्षरके अनंतमें भाग श्रुतज्ञान सब जीवोंके निर्मल है यथा दृष्टांत–आकाशमें सूर्य और चंद्रकी प्रभाको महा मेघ (वादलां) निस्तेज कर देते है जिससे प्रभा मंद पड़ जाती है। परन्तु वस्तु गत प्रभा अदृश्य रही हुई है जब बादलांका जोर हट जाते है तब प्रभाका प्रकाश देखा जाते है इसी भावना जीवमें भी समझना।

११ गमयं सुयं–गमिक श्रुत ज्ञान–जीसमे सदृश वार्ता आवे जेसे दृष्टीवादादिमें सरिखा अलावा आवे इसकु गमिक श्रुत ज्ञान कहेते है।

१२ अगमयं सुयं–अगमिक श्रुत ज्ञान जीसमें भिन्न भिन्न संबंध हो जेसे कालिक सुत्रादि।

१३ अग पविठ्ठ सुय–अग श्रुतज्ञान–द्वादशागी सूत्र

१४ अणग पविठ्ठसुय अनगश्रुतज्ञान–आवश्यक सूत्र आदि जीस्का २ भेद (१) आवश्यक (२) आवश्यक वितिरक्त।

आवश्यकका भेद ६–(अध्ययन) सामायिक, चउवीशत्थो, वदणाय, पडिक्कमण काउसग्गो पच्चक्खाण इति आवश्यक

आवश्यक विनिरक्तका २ भेद –(१) कालिक सूत्र (२) उत्कालिक सूत्र

उत्कालिक सूत्रका अनेक भेद है। जेसे दसवेकालिय कप्पियाकप्पिय, चुल्लकप्पसुय, महाकप्पसुय, उववइय, रा पसेणिय, जीवाभिगमो, पण्णवणा, महापण्णवणा, पमायप्पमाय, नदी अणुओगदाराइ देविंदत्थओ, तदुलवेयालिय, चदाविज्झय, सूरपन्नत्ती पोरिसिमडल, मडलपवेसो, विज्जाचारण, विणिच्छओ, गणि विज्जा, झाणविभत्ति मरणविभत्ति आयाविसोही वीयरागसुय सलेहणा सुय विहारकप्पो चरणविही आउरपच्चक्खाण महापच्चक्ख ण इत्यादि।

ये सूत्र लिखति वखत विकालमे पूर्ण होनेके सबबसे उत्कालिकका है ऐसा वृद्धवाद है।

कालिक सूत्रका अनेक भेद है उत्तराज्झयणाइ दशाओकप्पो ववहारो निसीह महानिसीह इसीभासियाई जबुद्दीपपण्णती दीवसागरपण्णत्ती चदपणत्ती खुड्डिया विमाणपविभत्ती महल्लियाविमाणपविभत्ती अगचूलिया वगाचूलिया विवाहचूलिया अरुणोववाए गरुलोववाए धरणोववाए वेसमणोववाए देलधरोववाए देवदोववाए उट्ठाणसुए समु-

द्वाणसुए, नाग परिया वलियाओ, निरयावलियाओ कप्पिआओ कप्पवडिंसिआओ पुप्फिआओ, पुप्फिचुलिआओ, वणीआओ, वण्हीदसाआओ, आसीविसभावणाओ दिट्ठिविसभावणाओ, चारण सुमिण भावणाओ, महा सुमिण भावणाओ तेअग्गि निसग्गाओ इत्यादि कालमे सूत्र पूर्ण होनासे कालिका कहा जाते हैं।

अत्र जो १३मां बोलमें अंग—द्वादशांग—कहा है उसका संक्षेपसे विवरण करते हैं।

१ आचारंग सूत्रमें—साधुका आचार है सो श्रमण निग्रन्थोंको सुप्रशस्त आचार, गोचर भिक्षा लेनेकी विधि) विनय वैनयिक, कायोत्सर्गादि स्थान, विहार भूम्यादिकमें गमन, चंक्रमण (श्रम दूर करनेके लिये उपाश्रयमे जाना), वा आहारादिक पदार्थोंका माप, स्वाध्यायादिमें नियोग, भाषादि समिति, गुप्ति, शय्या उपधि, भक्त, पान, उग्धमादि (उद्गम, उत्पाद और एषणा), दोषोंकी विशुद्धि शूद्धाशुद्ध ग्रहण, व्रत, नियम, तप और उपधान, प्रथम (आचारंग) अंगमे दो श्रुतस्कंध इत्यादि शेष यंत्रमें.

२ सूत्रकृतांग (सुअगडांग) सूत्रमें स्वसिद्धांत परसिद्धांत, स्वऔरपरसिद्धांत, जीव, अजीव, जीवाजीव, लोक अलोक, लोकालोक, जीव, अजीव, पुण्य, पाप, आश्रव, संवर, निर्जरा, बंध और मोक्ष सुधीका पदार्थो, इतर दर्शनसे मोहित, संदिग्ध नव दीक्षितकी बुद्धिकी शुद्धिके लिये एकसोएंशी क्रिया वादिका मत्त, चौरासी अक्रिया वादिका मत्त, सडसठ अज्ञान वादिका मत्त, बतीस विनय वादिकामत्त ए कुल मीलकर ३६३

अन्य दृष्टिका मतकों परिक्षेप करके स्वसमय स्थापन व्याख्यान है दुसरा अंगका दो श्रुतस्कंध इत्यादि शेष यत्रमें

३ स्थानाग सूत्रमें स्वसमयको, परसमयकों, और उभय समयकों स्थापन, जीवकों, अजीवको, जीवाजीवकों, लोकको, अलोककों लोकालोककों स्थापन, पर्वत, शिखर, कुट, झरण, कुंड, गुफा, आगर, द्रहे नदी आदि एकएक बोलसे लगाके दश दश बोलका संग्रह कीया हुवा है जीसका श्रुतस्कंध १ इत्यादि शेष यत्रमें -

४ समवायाग सूत्रमें स्वसिद्धात, परसिद्धात, उभय सिद्धात, जीव, अजीव, जीवाजीव, लोक अलोक, लोकालोक और एकादिक कितनाक पदार्थोकों एकोतरिक परिवृद्धिपूर्वक प्रतिपादन अर्थात् प्रथम एक सम्यक पदार्थोकों निरुपण पीछे द्विसख्यक यावत् क्रमसर ३–४ यावत् क्रोडाक्रोड पर्यंत अथवा द्वादशाग गणिपिटकका पर्यवोकों प्रतिपादन और तिर्थंकरोंके पूर्वभव मातापिता वा दीक्षा, ज्ञान, शिष्य आदि व चक्रवर्त, बलदेव, वासुदेव, प्रति वासुदेवादिकका व्याख्यान है जीसका श्रुतस्कंध १ इत्यादि शेष यत्रमें

५ व्याख्या प्रज्ञप्तिः—(भगवती) भगवतीसूत्रमें स्वसमय, परसमय, स्वपरसमय, जीव, अजीव, जीवाजीव, लोक, अलोक, लोकालोक अलग अलग प्रकारका देव, राजा राजर्षि और अनेक प्रकारके संदिग्ध पुरुषोने पुछे हुवे प्रश्नोका श्रीजिनभगवान विस्तार पूर्वक कह्या हुवा उत्तर, सो उत्तर, द्रव्य, गुण, क्षेत्रकाल, पर्यय, प्रदेश और परिणामका अनुगम निक्षेपण, नय, प्रमाण और विविध सुनिपुण उपक्रमपूर्वक यथास्ति भावना प्रतिपादन करे जीन्हसे लोक

और अलोक प्रकाशित है, वह विशाल संसार समुद्र तारनेको समर्थ है, इंद्रपूजित है भव्य लोकोंके हृदयका अभिनंदक है, अंधकाररूप मेलका नाशक हे, सुप्तुइष्टहै, दीपभूत है. इहा, मति और बुद्धिका वर्धक है, जीस प्रश्नोंकी संख्या ३६००० की है जीसमें श्रुतस्कंध इत्यादि शेष यंत्रमें.

ज्ञाता धर्मकथा सूत्रमें उदाहरण भूत पुरुषोंका नगरो, उद्यानो, चैत्यो, वनखंडो राजाओ, माता पिता, समवसरणो, धर्माचार्यो, धर्म कथाओ, यहलोकिक और, परलोकिक ऋद्धि विशेषो भोग परित्यागो प्रव्रज्याओ, श्रुत परिग्रहो, तपो, उपधानो, पर्यायो संलेखणा, भक्त प्रत्याख्यानो पादपोपगमनो, देवलोक गमनो, सुकुलमां प्रत्यवतारो, बोधिलाभो और अंतक्रियाओ, इस अंगमें दो श्रुत स्कंध और ओगणीस अध्ययनो है। धर्म कथाका दश वर्ग है जीसमें एक एक धर्मकथामें पांचसो पांचसो आख्यायिकाओ है। एक एक आख्यायिकामें पांचसो पांचसो उपाख्यायिकाओ है। एक एक उपाख्यायिकाओमें पांचसो पांचसो आख्यायिकोपाख्यायिकाओ है यह सर्व मिलके कथा वर्गमें गमिक (सादश) और अगमिक सामिल है जीसमें गमिक कथाओ छोडके शेष साडा तीन क्रोड़ कथाओ इस अंगमें है शेष यंत्रमें देखो।

७ **उपाशक**—दशांग सूत्रमें उपासको (श्रावको)का नगरो, उद्यानो, चैत्यो, वनखंडो राजाओ, माता पिताओ, समवसरणो, धर्माचार्यो, धर्मकथाओ यहलोकका और परलोकका रिद्धों विशेष और श्रावकोंका शीलव्रतो, विरमणो, गुणव्रतो, प्रत्याख्यानो, पौषधोपसो, श्रुत परिग्रहो, तपो उपधानो, प्रतिमाओ, उपसर्गो, संलेखना, भक्त

प्रत्याख्यानो, पादपोगमनो, देवलोक गमनो, सुकुलमा जन्मो, बोधिलाभ और अतक्रिया, इन अगका श्रुतस्कध १ है इत्यादि शेष सूत्रमें।

अतकृद्दशांग सूत्रमें अतकृत (अन्तकेवल) प्राप्त पुरुषोंका नगरो उद्यानो, चैत्यो, वनखडो, राजाओ, माता पिता, समवसरणो, धर्माचार्यो, धर्म कथाओ, यह लौक और परलोककी ऋद्धि, भोग परित्यागो, प्रव्रज्याओ, श्रुतपरिग्रहो, तपो उपधानो बहुविध प्रतिमाओ, क्षमा, आर्जव, मार्दव, सत्य सहित शौच, सत्तर प्रकारनो सयम उत्तम ब्रह्मचर्य, अकिंचनता, तप क्रियाओ, समितिओ, गुप्तिओ, अप्रमादयोग उत्तम स्वाध्याय और ध्यानका स्वरूप, उत्तम सयमकु प्राप्त और जित परिषह पुरुषोंकु चार प्रकारका कर्मक्षय हुआ बाद उत्पन्न हुवो अन समय केवल ज्ञानको लाभ, मुनिओंका पर्याय काल, पादपोपगन पवित्र मुनिवर जीतना भक्तो (भक्तनो)कु त्याग करके अतकृत हुआ इत्यादि इस अगका श्रुत स्कध १ है इत्यादि शेष सूत्रमें

९ **अनुत्तरोपपातिक** सूत्रमें–अनुत्तरोपपातिको (मुनिओ) का नगरो, उद्यानो चैत्यो, वनखडो राजाओ, माता पिताओ, समवसरणो, धर्माचार्यो, धर्म कथाओ, यह लोकका और परलोकका ऋद्धि विशेषो, भोग परित्यागो, श्रुतपरिग्रहो, तपो, उपधानो, पर्याय, प्रतिमा, सलेखना, भक्तपान प्रत्याख्यानो पादपोपगमनो, सुकुलागमनो, बोधि लाभो, और अन क्रियाओ उनका अगमें १ श्रुत स्कध है इत्यादि शेष सूत्रमें

१० **प्रश्न व्याकरण** सूत्रमें एकसो आठ प्रश्नो, एकसो

आठ अप्रश्नो, एकसो आठ प्रश्नाप्रश्नो, अंगुठा प्रश्नो, बाहु प्रश्नो, आदर्श (काच) प्रश्नो और भी विद्याका अतिशयो और नाग-कुमार और सुवर्ण कुमारकी साथे हुआ दिव्य संवादो इस अंगमे श्रुत स्कंध १ है इत्यादि शेष जंत्रमें।

११–**विपाक** -सूत्रमें विपाक संक्षेपसे दो प्रकार दुःख विपाक (पापका फल) और सुख विपाक (पुण्यका फल) जीसमें दुःख विपाकमें दुःखविपाकवालाओका नगरो, उद्यानो, चैत्यो वनखंडो, राजाओ, माता पिता, समवसरण, धर्माचार्यो, धर्म कथाओ, नरक गमनो संसार प्रबंध दुःख-परंपरा, और सुख विपाकमें सुख विपाकवालाओका नगरो, उद्यानो, चैत्यो, वनखंडो, राजाओ, माता, पिताओ, समव शरण, धर्मचार्य धर्म कथा, आलोकका और परलोकको ऋद्धि विशेषो, भोग परित्यागो प्रव्रज्याओ, श्रुत परिग्रहो तपो, उपधानो पर्यायो प्रतिमाओ, संलेखनाओ, भक्त प्रत्याख्यानो, पादपोपगमनो, देवलोक गमनो, सुकुलाव तारो, बोधिलाभ और अंतक्रियाओ, इस अंगमें इत्यादि शेष जंत्रमें।

१२ **दृष्टिवाद** सूत्रमें सब पदार्थोंकी प्ररूपणा है जीस्का अंग पांच है। १ **परिकर्म** (गणित विशेष तथा छन्द, पद, काव्यादिकी रचनाकी संकलना) २ **सूत्र** (दृष्टिवाद संबंधी ८८ सूत्रका विचार) ३ **पूर्व** (१४ पूर्व) ४ **अनुयोग** (जिसमें तिर्थकरोंका व पंचकल्याणक व परिवार और रुषभदेव और अजीतनाथके आंतरामें पाटोनपाट मोक्ष गये थे जीस्का

अधिकार (५) चूलिका (पूर्वकि उपर चूलिका) दृष्टिवादमें श्रुतस्कंध एक है पूर्व चौदा वस्थ (अध्येन) सख्याता इत्यादि

यह द्वादशागीमें प्रत्येक अगकी, प्रत्येक वाचना सख्याता व्याख्यान द्वार, सख्याता वेदा जातका छ, सख्याता श्लोक सख्याती निर्युक्ति, सख्याति सग्रहणी गाथा, सख्याती परिवृत्ति, सख्यातापद, सख्याता अक्षर, अनता गमा, अनतापर्यवा, परितात्रस और अनता स्थावर इत्यादि सामन्य विशेष सब रे श्री तिर्थंकर भगवानने परुपणा करी है और द्वादशागीमें अनता भाव, अनना अभाव, अननाहेतु, अनना अहेतु, अनना कारण अनता अकारण अनता जीव अनता अजीव अनता भवसिद्धिया, अनता अभव सिद्धिया अनना सिद्धा अनता असिद्धा इत्यादि भाव है

नोट—कालीक उत्कालीक सत्राक सिवाय भगवान ऋषभप्रभुके ८४००० मुनिओने ८४००० पइन्नावावत् वीर प्रभुके १४००० मुनिओने १४००० पइन्ना रचाई अर्थात् जीस तीर्थंकरोंके जीतना मुनि होते हैं वह उत्पातिकादि स्वय बुद्धिसे एकाएक पन्ना बनाते है ।

प्रथम ११ अंगका यंत्र

अंग	मूल पद संख्या	वर्तमान श्लोक	कर्ता	अध्ययन	उद्देशा	टीका संख्या	टीका कर्ता	टीका वि. संवत
१ आ०	१८००० *	२५२५	सुधर्मा स्वामी पंचमा गणधर	२५	८५	१२०००	शीलांगाचार्य अं० ४	९३३
२ सु०	३६०००	२१००		२३	३३	१२८५०		९३३
३ ठा०	७२०००	३६००		ठा १०	२१	१४२५०	अभयदेवसूरि आचार्य	११२०
४ स०	१४४०००	१६६७		१	१	३५७४		"
५ भ०	२८८०००	१५७५२		श० ४१/१९२८	१००००/१९२५	१८६१६		"
६ ज्ञा०	५७६०००	५४००		१९/२०६	०	३८००		"
७ उ०	११५२०००	८१२		१०	०	८००		"
८ अं०	२३०४०००	८९९		व ८/९०	०	४००		"
९ अ०	४६०८०००	१९२		श्र. ३/३३	०	१००		"
१० प्र०	९२१६०००	१२५६		४५/१०	०	४६००		"
११ वि०	१८४३२०००	१२१६		२०	०	९००		"

* एक पदका अक्षर १६३४८ १०७८८८ ... ...

पदको ३२ अक्षरका श्लोकका हिसाबसे करे तो ५१०८८४६२१॥ श्लोक एक पदका होता है ऐसा १८००० पद श्री आचारांग सूत्रका इसी माफिक सर्व अंगोंमें समझना

१४ पूर्वोका यंत्र.

पूर्वोका नाम	पद संख्या	कर्ता	वस्तु	चूल वस्तु	साहीहस्ति	विषय
उत्पाद	१ क्रोड	पूर्वधरस्वामी पांचमा गणधर	१०	४	१*	सब द्रव्य पर्यायका उत्पन्न और नाश
अग्रणीय	७० लाख		१४	१२	२	सर्व द्रव्य पर्यायका जाणपणा
वीर्य	६० ,,		८	८	४	जीवका वीर्यका व्याख्यान
अस्तिनास्ति	१ क्रोड		१८	१०	८	आस्तिनास्तिका स्वरूप व स्याद्वाद
ज्ञानप्रवाद	१ ,,		१२	०	१६	पांच ज्ञानका व्याख्यान.
सत्य प्र०	२६ ,,		२	०	३२	सत्यसंजमका व्याख्यान
आत्मा प्र०	१ क्रो ८०ला		१६	०	६४	नय प्रमाण, दर्शन सहित आत्माका स्वरूप
कर्म प्र०	८४ लाख		३०	०	१२८	कर्मप्रकृति, स्थिति, अनुभाग, मूल उत्तर प्रकृति
प्रत्याख्यान प्र०	१ क्रो १०ह		२०	०	२५६	प्रत्याख्यानका प्रतिपादन
विद्या प्र०	२० क्रोड		१५	०	५१२	विद्याका अतिशयका व्याख्यान
कल्याणक प्र०	१ क्रोड		१२	०	१०२४	भगवानका कल्याणकका व्याख्यान
प्राणावाय	६ क्रोड		१३	०	२०४८	भेद सहित प्राणका विषयको व्याख्यान
क्रिया विशाल	१२ क्रो ५०ला		३०	०	४०९६	क्रियाका व्याख्यान
लोकबिंदु सार	९६ लाख		२५	०	८१९२	बिंदुके अंदर लोकका स्वरूप सर्व अक्षर सन्निपात

* एक हस्ति-अंबाडी सहित हो इतना ढगला साहीका कर उतनी साहीसे प्रथम पूर्व लीखाता है इसी माफिक आगे समझना

ये द्वादशांगीकी भूतकालमें अनंतजीव विराधना करके चतुर्गति संसारके अंदर परिभ्रमण कीया वर्तमान कालमें संख्याता जीव परिभ्रमण करते है और भविष्य कालमें अनंतजीव परिभ्रमण करेगा.

ये द्वादशांगीकी भूतकालमे अनंता जीव आराधना करके संसाररूपी समुद्रकूं पार पहोंचे (मोक्ष गया) और वर्तमान कालमें संख्याता जीव मोक्ष जाते है (महाविदेह अपेक्षा) और भविष्यमें द्वादशांगीकी आराधना करके अनंताजीव मोक्षमें जावेगा.

ये द्वादशांगी भूतकालमे थी, वर्तमान कालमें हे और भविष्य कालमें रहेगी. जैसे पंचास्तिकायकी माफिक निश्चल, नित्य, शाश्वती, अक्षय, अव्यावाह, अवस्थित रहेगी.

श्रुतज्ञानका संक्षेपसे चार भेद हे (१) द्रव्य, (२) क्षेत्र, (३) काल, (४) भाव.

(१) द्रव्यसे उपयोग युक्त श्रुतज्ञान सर्व द्रव्यकुं जाणे देखे.
(२) क्षेत्रसे उपयोग सहित श्रुतज्ञान सर्वक्षेत्रकुं जाणे देखे.
(३) कालसे उपयोग सहित श्रुतज्ञान सर्वकालकुं जाणे देखे.
(४) भावसे उपयोग सहित श्रुतज्ञान सर्वभावकुं जाणे देखे.

इति श्रुतज्ञान. इति परोक्षज्ञान

सेवंभंते सेवंभंते

तमेव सच्चम.

थोकड़ा नं० २

सूत्र श्री पन्नवणाजी पद ३३

अवधि पद

१ भव, २ विषय, ३ सठाण ,४ अभ्यतर बाह्य ५ देशमे सर्वमे ६ हयमान, वर्धमान अवस्थित ७ अणुगमी अणानुगामी ८ प्रतिपाति अप्रतिपाति इति द्वार ८

भव–अवधिज्ञान नारकी और देवताकु भव प्रत्ये होता हैं और मनुष्य व तिर्यंच पंचेन्द्रियको क्षयोपशम प्रत्ये होता है ।

विषय–अवधि ज्ञान उर्ध्व अधो और तिर्छा लोकमे ज्ञानसे कितना क्षेत्र जाणे ।

नाम	जघन्य	उत्कृष्ट
रत्नप्रभा नारकी	३॥ गाउ	४ गाउ
शार्करा प्रभा ,,	३ गाउ	३॥ गाउ
बालुका प्रभा ,,	२॥ गाउ	३ गाउ
पंक प्रभा ,,	२ गाउ	२॥ गाउ
धूम्र प्रभा ,,	१॥ गाउ	२ गाउ
तम प्रभा ,,	१ गाउ	१॥ गाउ
तमतमा प्रभा	०॥ गाउ	१ गाउ

आसुर कुमारका देवता जघन्य २५ जोजन उत्कृष्ट उर्ध्व लोके सुधर्माकल्प और अधोलोक त्रीजी नारकी और तीर्छा लोकमें असंख्याता द्वीप समुद्र जाणे। नागकुमार आदि नव निकायका वता दे

जघन्य २५ जोजन उत्कृष्टा उर्ध्व लोके जोतिषीका उपरका तलो अधोलोकमें पहेली नारकी और तीर्छो लोकमें संख्याता द्वीप समुद्र एवं वाणव्यंतर । जोतिषी जघन्य संख्याता द्वीप समुद्र उत्कृष्टा संख्याता द्वीप समुद्र अवधिज्ञानसे जाणे देखे

१–२ देवलोकका देवता जघन्य आंगुलका असंख्यातमें भाग उत्कृष्टा उर्ध्व अपने अपना विमानकी ध्वजा पताका और अधो लोकमें प्रथम नारकी और तिर्छा लोकमें असंख्याता द्वीप समुद्र जाने देखे

३–४ देवलोक जघन्य आंगुलको असंख्यातमो भाग उत्कृष्टा उर्ध्व अपने अपना विमानका ध्वजा पताका अधोलोकमें दुजी नारकी तीर्छा लोकमें असंख्यता द्वीप समुद्र एवं

५–६ देवलोक किंतु अधो लोकमें त्रीजी नारकी एवं ७–८ देवलोक किंतु अधो लोकमें चोथी नारकी एवं ९–१० ११–१२ देवलोक किंतु अधोलोकमें पांचमी नारकी एवं प्रथमका छ ग्रैवेयक किंतु अधोलोकमें छठ्ठी नारकी एवं तीन ग्रैवेयक तथा चार अनुत्तर विमान किंतु अधोलोकमें सातमी नारकी और स्वार्थ सिद्ध विमानका देवता लोक भिन्न (त्रसनाल) नाली देखे तीर्यंच पंचेद्रिय जघन्य आंगुलको असंख्यातमो भाग उत्कृष्ट असंख्याता द्वीप समुद्र । मनुष्य जघन्य अंगुलका असंख्यातमो भाग उत्कृष्टा संपूर्ण लोक और लोक जीतना असंख्याता खंडो अलोकमें भी जाणे देखे ।

उपर लीखा मुजब अवधि ज्ञानकी विषय जाणनी इति द्वारम्

३ संठाण नारकी कानेरीया अवधिज्ञानसे देखे वो तीपायाके संठाण देखे भुवनपति डाला पालाके संठाण देखे वाणव्यंतर ढोलके

सठाण देखे और जोतिषी झालरके सठाण देखे, बारा देवलको ऊभी मदंगके सठाण देखे और नव ग्रैवेयक पुष्पोकी चगेरी, (छाब) के सठाण देखे अनुत्तर विमानका देवता कुमारिका कञ्चुआके सठाण देखे मनुष्य और तिर्यंच नाना प्रकार सठाणसे अवधिज्ञान देखे। इति द्वारम्।

४ नारकी देवताओंके अवधिज्ञान है सो अभ्यतर है कारण उत्पन्न होते है तब साथमें लेके उत्पन्न होता है (परभवसे साथमें लाते है) और तिर्यंच पचेन्द्रिय अवधिज्ञान बाह्य होता है। मनुष्यके बाह्य और अभ्यतर दोनों प्रकारसे होता है। इति द्वारम्

५ नारकी देवताओ और तिर्यंच पचेन्द्रियके अवधिज्ञान देश थकी होते है और मनुष्यके देश थकी और सर्व थकी दोनो प्रकारसे होते है। इति द्वारम्

६ नारकी देवताओंके ज्ञान अवस्थित है कारण भव मत्ये होते है और मनुष्य और तिर्यंच पचेन्द्रिके तीनु प्रकारके होने है। इति द्वारम्

७ नारकी देवताओंकि अवधिज्ञान अणुगामी होता है और मनुष्य तिर्यंच पचेन्द्रियके अणुगामी अणाणुगामी दोनो प्रकारसे होता है। इति द्वारम्

८ नरकी देवता अवधिज्ञान अप्रतिपाति होता है कारण भव प्रत्य होनेसे और तिर्यंच पचेन्द्रियमें प्रतिपाति और मनुष्यके प्रतिपाति व अप्रतिपाति दोनु प्रकारका होता है। इति द्वारम

सेवभते सेवभते

तमेव सच्चम्

थोकड़ा नं० ३

सूत्र श्री भगवती शतक ८ उद्देशो२जो

पांच ज्ञानकी लब्धि

१ जीव, २ गति, ३ इंद्रिय ४ काय ५ सूक्ष्म ६ पर्याप्ता ७ भवस्थी ८ भवसिद्धि ९ सन्नि १० लब्धि ११ नाणा १२ जोग १३ उपयोग १४ लेश्या १५ कषाय १६ वेद १७ अहार १८ ज्ञान-(विषय) १९ काल (स्थिति) २० आंतरो २१ अल्पा बहुत ।

ज्ञान ५--मतिज्ञान श्रुतज्ञान, अवधिज्ञान मनःपर्यय ज्ञान, केवलज्ञान

अज्ञान ३—मतिअज्ञान, श्रुतअज्ञान विभंगज्ञान

(भ)—भजना (होय या न होवे) का चिन्ह है (नि) नियमा (निश्चय हो) का चिन्ह है

संख्या	मार्गणा	ज्ञान	अज्ञान
१	समुच्चय जीव	५ भ	३ भ
२	प्रथम नारकी, १० भुवनपति, वाणव्यंतर	३ नि	३ भ
३	छे नारकी जोतिषी २१* देवलोक	३ नि	३ नि

* १२ देवलोक ९ ग्रैवेग एंव २१

पाच अनुत्तर विमान	३ नि	०
४ पाच स्थावर असज्ञि मनुष्य	०	२ नि
५ तीन विकलेन्द्रिय असज्ञि तिर्यंच	२-नि	२ नि
६ सज्ञि तिर्यंच पञ्चेन्द्रिय	३ म	३ म
७ सज्ञि मनुष्य	५ म	३ म
८ सिद्ध भगवान	१ नि	०
९–१० नरकगतिआ देवगतिआ	३ नि	३ म
११ तिर्यच गतिआ	२ नि	२ नि
१२ मनुष्य गतिआ	३ म	२ नि
१३ सिद्ध गतिआ	१ नि	०
१४ सइन्द्रिया	४ म	३ म
१५ पञ्चेन्द्रिय	४ म	३ म
१६–१८ तीन विकलेन्द्रिय	२ नि	२ नि
१९ एकेन्द्रिया	०	२ नि
२० अणिन्द्रिया	१ नि	०
२१ सकाया	५ म	३ म
२२ त्रसकाया	५ म	३ म
२३–२७ पाच स्थावर	०	२ नि
२८ अकाया	१ नि	०
२९ सूक्ष्म	०	२ नि
३० बादर	५ म	३ म
३१ नो सूक्ष्म नोबादर	१ नि	०

३२ प्रथम नारकी १० भुवनपति ३ नि ३ भ
१ व्यंतर अपर्याप्ता
३३ पांच नारकी जोतिषी २१ देवलोक ,, ३ नि ३ नि
( ) पांच अनुतर विमान ,, ,, ३ नि ०
३४ सातमी नारकी ,, ० ३ नि
३५ पांच स्थावर असन्नि मनुष्य ,, ,, ० २ नि
३६ तीन विकलेंद्रिय असेन्नि तिर्यंच ,, २ नि २ नि
३७ सन्नि तिर्यंच ,, २ नि २ नि
३८ सन्नि मनुष्य ,, ३ भ २ नि
३९ नारकीसे नव नवग्रैवेयक-पर्याप्ता ३ नि ३ नि
४० पांच अनुत्तर विमान पर्याप्ता ३ नि ०
४२ पांच स्थावर तीनविकलेंद्रिय असन्नि
तिर्यंच मनुष्यका पर्याप्ता ० २ नि
४४ सन्नि तिर्यंच पर्याप्ता ३ भ ३ भ
४५ मनुष्यका पर्याप्त ५ भ ३ भ
४६ नो पर्याप्तानो अपर्याप्ता १ नि ०
४७ नरक और देव भवथा ३ नि ३ भ
४८ तिर्यंच भवथा ३ भ ३ भ
४९ मनुष्य भवथा ५ भ ३ भ
५० अभवथा १ नि ०
५१ भव सिद्धिया ५ भ ३ भ
५२ अभव सिद्धिया ० ३ भ